जनवरी २०१३

कीमत रु १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

गुरुकृपा

गुरुकृपा

संपादकीय

बालमित्रो,

गुरुकृपा के बारे में कवि ने एक सुंदर पद लिखा है।

मूंगा वाचा पामता, पंगु गिरी चढ़ी जाए।
गुरुकृपा बल ओर छे, अंध देखता थाए।

ओहो! गुरुकृपा कैसा अद्‌भुत काम करती है! यह तो हुई आध्यात्मिक गुरु की बात। लेकिन गुरु मतलब गुरु। फिर वह धर्म के हों या स्कूल के। गुरुकृपा सभी विघ्नों को दूर करके सीधे लक्ष्य तक पहुँचा ही देती है। इसमें दो मत नहीं।

यदि गुरुकृपा में इतना अधिक बल हो, तो उसे प्राप्त करने के लिए अपनी तरफ से कैसा होना चाहिए, उसकी सुंदर समझ परम पूज्य दादाश्री ने इस अंक में दी हैं। तो आओ, हम भी इस समझ के अनुसार चलकर गुरुकृपा के अधिकारी बनें और सरलता से ध्येय तक पहुँचे। देखना, तुम्हारे मित्रों को भी यह अमूल्य चाबी देना भूलना मत।

- डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : १ अंक : ९
अखंड क्रमांक :९
जनवरी २०१३

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
अहमदाबाद : (०७९) २७५४०४०८, २७५४३९७९

राजकोट त्रिमंदिर : ९२४१११३९३
वडोदरा : (०२६५) २४१४१४२
मुंबई : ९३२३५२८९०१-०३
यु.एस.ए. : ७८५-२७१-०८६९
यु.के. : ०७९५६४७६२५३
Website: kids.dadabhagwan

Printed, Published and Owned by : Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printing Press:-
Amba Offset
Basement, Parshvanath Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

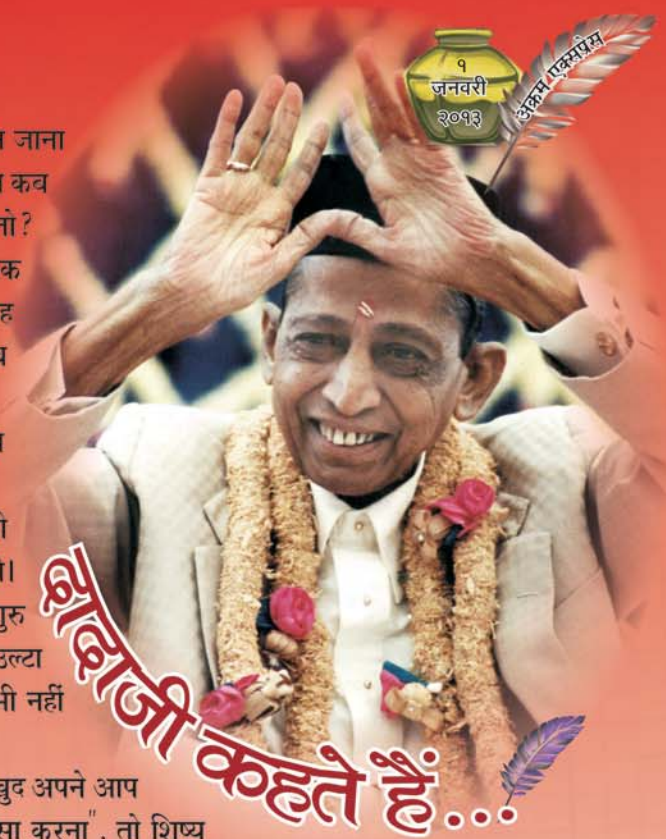

रास्ते में अंत तक गुरु की ज़रूरत पड़ेगी। यदि स्टेशन जाना हो तो भी गुरु चाहिए। और हमें स्कूल में शिक्षकों की ज़रूरत कब पड़ती है? हमें पढ़ना हो तभी न? और पढ़ना ही नहीं हो तो? अगर लाभ लेना हो तो गुरु बनाओ। तुम्हें पढ़ना हो तो शिक्षक के पास जाओ। शिष्य अपने आप कुछ नहीं कर सकता। वह तो गुरु की कृपा से ही आगे-आगे बढ़ते जाता है। मतलब गुरु के बिना कोई भी ज्ञान प्राप्त हो, ऐसा है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : गुरु की कृपा प्राप्त करने के लिए शिष्य को क्या करना चाहिए?

दादाश्री : शिष्य को कृपा प्राप्त करने के लिए गुरु को राज़ी रखना चाहिए, राज़ी रखे, तो उस पर कृपा होगी। कृपादृष्टि यानी क्या? उनके कहे अनुसार करते रहें तो गुरु राज़ी रहते हैं, वही कृपादृष्टि कहलाती है। और कहने से उल्टा करें तो नाराज़ हो जाते हैं। वह विरुद्ध चले तो कृपा भी नहीं रहती।

शिष्य मन में सोचे कि गुरु में ज़रा अक्ल कम हैं। खुद अपने आप सोच समझकर कर लो न! शिष्य से गुरु कहे कि "ऐसा करना", तो शिष्य सामने तो "हाँ" कहेगा, मगर कुछ अलग ही करेगा और फिर शिष्य कहेगा, "वे तो बोलते हैं, घनचक्कर हैं ज़रा" ऐसा सब चलता है। गुरु कहें कि, आपको ग्यारह बजे यहाँ से कहीं भी नहीं जाना, फिर मन उछल कूद करे तब भी नहीं जाना है।

गुरु की भूल नहीं देखनी चाहिए। जब कभी गुरु थोड़ा कुछ, ऐसा वैसा बोलें या तुम पर चिढ़ जाएँ तो वह मत देखना। गुरु बनाए यानी बनाए, फिर उनका एक भी दोष नहीं दिखे, इस तरह रहना।

गुरु पर अभाव नहीं आए तो अपनी श्रद्धा फलेगी। गुरु कभी पागलपन करें तब भी अभाव नहीं रहे तो अपनी श्रद्धा फलेगी। लेकिन अगर आप अपना भाव नहीं बिगाड़े तो। क्योंकि गुरु के भीतर भगवान बैठे हैं जीते-जागते।

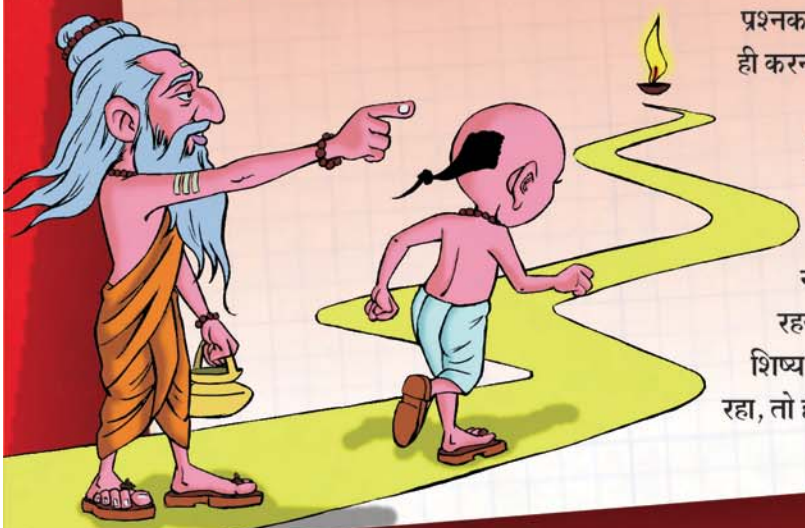

प्रश्नकर्ता : कृपा गुरु की चाहिए, लेकिन शिष्य को ही करना पड़ेगा न?

दादाश्री : कुछ करना ही नहीं है, केवल विनय रखना है। इस जगत् में करना ही क्या? विनय रखना है, दूसरा क्या करना है? कभी भी अपना मन उनके प्रति बिगड़े नहीं और एक भी दोष न दिखे इस तरह रहना। गुरु कैसा भी वर्तन करें लेकिन भीतर से शिष्य उनके अधीन ही रहे। यदि गुरु की आज्ञा में रहा, तो हो गया कल्याण!

कृपा का महत्व

सोनगढ़ नगर में गुरु दयानंद का एक शिल्पकला का विद्यामंदिर बहुत ही प्रसिद्ध था। गाँव-गाँव से लोग दयानंद की शिल्पकला देखने आते थे। इस विद्या का सिंचन दयानंदजी ने अपने शिष्यों में भी खूब बारीकी से किया था।

दयानंदजी का प्रमुख शिष्य उत्पल, इस विद्या में बहुत पारंगत हो गया था। बचपन से ही विद्यामंदिर के आँगन में छेनी के साथ खेलते-खेलते उत्पल कब पत्थर पर छेनी चलाना सीख गया, उसका उसे पता ही नहीं चला। अपने गुरु की तरह, उत्पल की मूर्तियों का भी चारों तरफ बोलबाला था। खेती करता किसान, खेलता हुआ बालक, दाना चुगते पक्षी आदि बहुत-सी मूर्तियाँ उत्पल ने बनाई थीं। उत्पल के हाथ पत्थरों में प्राण भर देते थे। उसकी मूर्तियाँ देखकर लोगों को लगता, जैसे मूर्तियाँ अभी बोल उठेंगी!

जब सारा गाँव उत्पल की मूर्तियों की तारीफ करता, तब गुरुजी की तेज़ आँखें उसकी कारीगीरी में कुछ न कुछ गलती निकाल देतीं। गुरुजी उत्पल को गलती सुधारने के लिए कहते। उत्पल को गुरुजी की बातें बहुत भारी लगतीं, लेकिन जब वह गुरुजी की बताई हुई गलती को सुधारता, तब मूर्ति और भी सुंदर बनती। जैसे-जैसे उत्पल अच्छा काम करता गया, वैसे-वैसे गुरुजी की चकोर आँखें और भी तेज़ होती गईं और उन्हें उत्पल की कुछ न कुछ गलती दिख ही जाती।

एक बार उत्पल ने राजा की हूबहू प्रतिमा बनाई, पहचानना मुश्किल हो गया कि राजा कौन है और प्रतिमा कौन! जब गुरुजी ने वह मूर्ति देखी तो उन्होंने एक कमी बताई। उत्पल को सुधारने को कहा। यह

सुनकर उत्पल की धीरज टूट गई, उसने कहा, "आप तो मेरी गलतियाँ ही बताते रहते हैं! पूरे गाँव को लगता है कि श्रेष्ठ मूर्ति बनी है और आपको गलतियाँ ही दिखती हैं। आपको मेरी कदर ही नहीं है, मेरे नीचे गिरने में ही आपको रुचि है। मेरा नीचा दिखे ऐसी ही इच्छा है न आपकी? मेरी प्रगति आप से सहन नहीं होती।" वह गुस्से में बोलता ही जा रहा था। यह सुनकर गुरुजी को बहुत धक्का लगा। उनका सबसे कुशल शिष्य इतना अविनय करेगा, वे सोच भी नहीं सकते थे। दयानंदजी अपने गुरु का विनय कभी भी नहीं चूके थे। उन्होंने हमेशा गुरुकृपा को ही अपनी कुशलता का कारण बताया था। गुरु की कृपादृष्टि से ही उनकी प्रगति हुई है, ऐसी उनकी दृढ़ श्रद्धा थी और आज उत्पल के ऐसे कठोर शब्द और अविनय से वे बहुत निराश हो गए। उत्पल पर से उनकी कृपादृष्टि जैसे उड़ गई। वे एकदम मौन हो गए।

उसके बाद उत्पल ने दो-चार मूर्तियाँ बनाईं। गुरुजी ने उन मूर्तियों में कोई गलती नहीं निकाली। गुरुजी के इस व्यवहार से उत्पल को मन में लगा "हाँ, अब इनका अहंकार उतरा, अब ये ठिकाने आए। अब इन्हें समझ में आया कि मैं कितना श्रेष्ठ शिल्पी हूँ।"

कुछ दिनों बाद राजा ने उत्पल की बनाई हुई प्रतिमा देखी। अपनी हूबहू प्रतिमा देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। उत्पल की कला की प्रशंसा करते हुए राजा बोले, "उत्पल, हम तुम्हारी शिल्पकला से बहुत प्रभावित हुए हैं। अपने राज्य में माताजी का मंदिर बन रहा है। उसमें माताजी की भव्य प्रतिमा बनाने का काम हम तुम्हें सौंपते हैं।"

दूसरे ही दिन से उत्पल माताजी की प्रतिमा बनाने में लग गया। एक महीना बीता, दो महीने बीते लेकिन प्रतिमा किसी भी प्रकार से संतोषजनक नहीं बन रही थी। प्रतिमा बनने के बाद भी कुछ कमी रह गई हो, उत्पल को ऐसा लग रहा था। उसे बहुत दुविधा हो रही थी। बहुत ही उलझन हुई तब उसे गुरुजी के मार्गदर्शन की कमी महसूस हुई। उसकी समझ में आ गया कि जब गुरुजी उसकी गलतियाँ बताते थे, तब उसकी प्रगति हो रही थी। जो गलती गुरुजी बताते थे, उस गलती को सुधारने के लिए वह बहुत बारीकी और लगन से काम करता था। लेकिन जब से गुरुजी ने उसकी गलतियाँ निकालना बंद किया, तब से उसकी प्रगति रूक गई थी।

प्रतिमा सुधारने के लिए उत्पल गुरुजी के पास मार्गदर्शन लेने के लिए गया। गुरुजी ने पाक दिल से उत्पल की गलती बताई और कुछ ठीक-ठाक करने को भी कहा। फिर बहुत प्रेम से गुरुजी ने कहा, "बेटा, तेरी प्रगति हो, उसमें मैं राज़ी ही हूँ। तेरी प्रगति ही मेरी भावना है। मेरा शिष्य मुझसे आगे बढ़े, उसमें मुझे आनंद ही है। दुनियावालों को तारीफ करने में क्या परेशानी है? लेकिन गलती तो परीक्षक को ही मालूम पड़ती है न!"

यह सुनकर उत्पल गुरुजी के पैरों में गिर गया। खुद के अविनय का उसे बहुत पछतावा हुआ। पश्चाताप के आँसुओं के साथ उसने दिल से गुरुजी से क्षमा माँगी। गुरुजी की बताई हुई गलतियों को ध्यान से सुधारा, उसने माताजी की भव्य प्रतिमा बनाई। माताजी की अद्‌भुत और भव्य प्रतिमा देखकर पूरा गाँव भावविभोर हो गया। राजा भी उत्पल की कारीगरी से बहुत प्रसन्न हुए। तब उत्पल ने कहा, "यह तो गुरु की कृपा से हुआ है, मुझसे नहीं।"

और इस तरह राज्य में आनंद और उल्लास से मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन हुआ।

देखा, गुरु का अविनय करने से कृपा कम हो जाती है। गुरु को विनय या मान की ज़रूरत नहीं होती, यह तो अपनी प्रगति के लिए ही हैं।

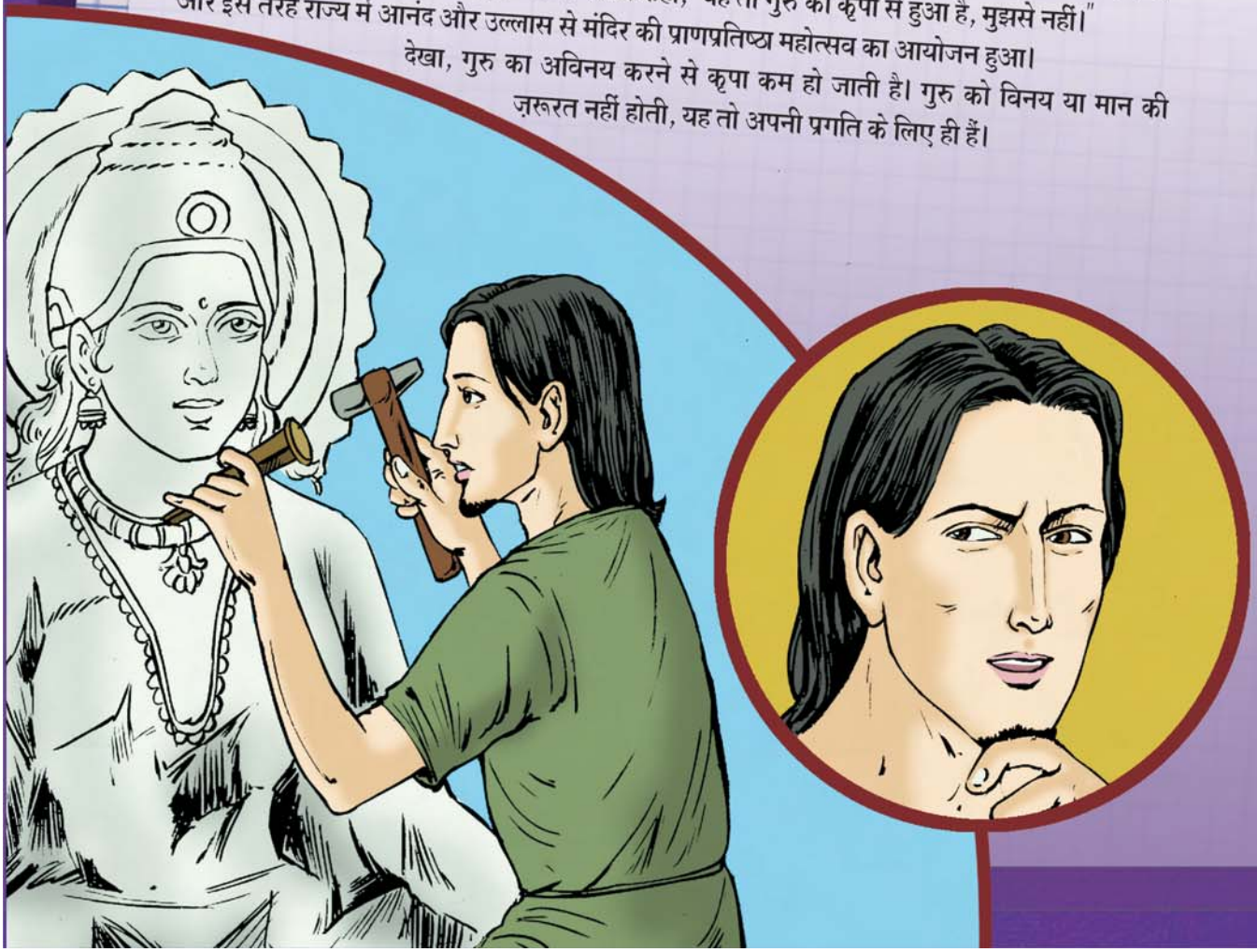

५ जनवरी २०१३
अक्रम एक्सप्रेस
गुरु का विनय
पुराने समय की बात है। उस समय विद्यार्थी गुरुकुल में पढ़ते थे। गुरुजी के पास रहकर सभी विद्याएँ प्राप्त करते थे।
गुरुजी, आज परीक्षा में राघव नकल कर रहा था।
अच्छा, मैं पता लगाऊँगा।
थोड़े दिन बाद,
गुरुजी, आज मैंने राघव को पड़ोसी के बाग में से फल चोरी करते देखा।
अच्छा महिपाल, मैं उसे उचित दंड दूँगा। लेकिन बेटा, तू तेरी पढ़ाई पर ध्यान रख। कल की गणित की परीक्षा की पूरी तैयारी हो गई है न?
परीक्षा का परिणाम बताते हुए,
महिपाल, तुमसे मुझे यह आशा नहीं थी। गणित में तुम्हारी कुशलता पर मुझे ज़रा भी संशय नहीं था। लेकिन तुम्हारें उत्तर देखकर मुझे बहुत निराशा हुई है। कल ये सभी पहाड़े सौ बार लिखकर लाना।
कुटीर में
गुरुजी कितने पक्षपाती हैं! मेरी इतनी छोटी-सी भूल के लिए मुझे कितनी बड़ी सज़ा दे दी! और वह राघव कितना बड़ा अपराध कर रहा है! धनवान होते हुए भी चोरियाँ करता है। उसे गुरुजी कुछ भी नहीं कहते। ज़रूर राघव के पिताजी से उन्हें भेंट-सौग़ात मिलतीं होगीं। इसलिए चुप रहते हैं।
महिपाल, गुरुजी के लिए ऐसे शब्द मत बोल। शायद कभी हमें गुरुजी का आशय समझ में नहीं भी आए, लेकिन इस वजह से उनका अविनय नहीं करना चाहिए। उनका अविनय करोगे तो उनसे विद्या कैसे ग्रहण करोगे?
अच्छा, अच्छा, तुझे जब सज़ा होगी तब ये बड़ी-बड़ी बातें याद कराऊँगा।

दूसरे दिन महिपाल ने राघव को फिर से चोरी करते देखा। उसे बहुत बेचैनी हुई।
गुरुजी, राघव का ऐसा वर्तन हमसे सहन नहीं होता। आज ही उसे गुरुकुल से बहार निकालिए।
महिपाल तू तो कितना समझदार है कि तुझे अच्छे-बुरे की समझ आ गई है। तू तो कहीं भी जाकर पढ़ सकता है। लेकिन राघव को तो अभी अच्छे-बुरे का भेद भी समझ में नहीं आया और मुझे यही सिखाना है।
यह सुनकर महिपाल एकदम चुप हो गया। श्यामल की बात उसे याद आई और गुरुजी का आशय भी उसे समझ में आया।
थोड़े दिन बाद,
श्यामल, यह क्या लिखा है? व्याकरण में ऐसी गलतियाँ नहीं चलेगी। यह पाठ कल पाँच बार लिखकर लाना।
कुटीर में आकर श्यामल ने गुरुजी की दी हुई सज़ा खूब ध्यानपूर्वक पूरी की। दूसरे दिन गुरुजी ने फिर से उसे अन्य विषय के लिए सज़ा दी और ऐसे बहुत दिनों तक चला। किसी न किसी कारण से श्यामल को सज़ा मिलती और श्यामल गुरु के प्रति थोड़ा-सा भी विनय चूके बिना, उनकी कही हुई बात ध्यानपूर्वक करता।

एक शाम को श्यामल कुटीर में बैठकर सज़ा के तौर पर गुरुजी द्वारा दिया हुआ गृहकार्य पूरा कर रहा था।

श्यामल, गुरुजी तुझे इतनी सज़ा देते हैं, फिर भी तुझे उनके प्रति कोई नकारात्मक भाव नहीं होता। मैं तो कितनी छोटी-सी बात के लिए चिढ़ गया था। तूने अंदर कौन-सी समझ सेट की है कि जिससे तुझे उनके प्रति बिल्कुल भी अविनय नहीं होता?

७ जनवरी २०१३

थोड़ा सोचकर,

मेरे पिताजी लुहार हैं। उनकी दुकान में लोहा आता है और उस लोहे से वे छुरियाँ बनाते हैं। लेकिन क्या तुझे मालूम है कि छुरी बनाने की प्रकिया क्या होती है?

नहीं।

जब तक लोहा लाल-लाल न हो जाए, तब तक पिताजी उसे गरम करते हैं। फिर बहुत ज़ोर से हथोड़े से लोहे को पीटकर उसे आकार देते हैं और फिर ठंडे पानी में उस लोहे को डाल देते हैं। पूरी दुकान भाप से भर जाती है और ऐसी प्रकिया वे बहुत बार करते हैं।

महिपाल को उसके प्रश्न का जवाब तो नहीं मिला था, लेकिन फिर भी वह रुचिपूर्वक सुन रहा था।

कई बार लोहा यह पद्धति सहन नहीं कर सकता और टूट जाता है। पिताजी उस लोहे को कबाड़े में फेंक देते हैं।

थोड़ी देर रुककर, श्यामल ने महिपाल के मुख्य प्रश्न का जवाब दिया।

जैसे पिताजी लोहे को मारकर उसे आकार देते हैं, वैसे ही गुरुजी भी मुझे गढ़ रहे हैं। जब गुरुजी मुझे सज़ा देते हैं, तब मैं अंदर ऐसा ही सोचता हूँ कि गुरुजी मेरे हित के लिए ही कर रहे हैं तो फिर मैं उनका अनादर या अविनय कैसे कर सकता हूँ?

यह सुनकर महिपाल बहुत प्रभावित हो गया।

बिल्कुल सही बात है। मेरे अविनय से मैं तो उस कबाड़ के लोहे की तरह फेंक दिया गया होता, पर यह बात बताकर तूने मुझे बचा लिया।

मुस्कुराते हुए, श्यामल फिर अपने काम में लग गया।

८ जनवरी २०१३

यह तो नई

तुम जिन्हें समर्पित होते हो, उनमें जो ताकत होती है वह तुम्हें प्राप्त हो जाती है। ताकत मतलब शारीरिक नहीं, लेकिन ज्ञानमार्ग में आगे बढ़ने की शक्ति!

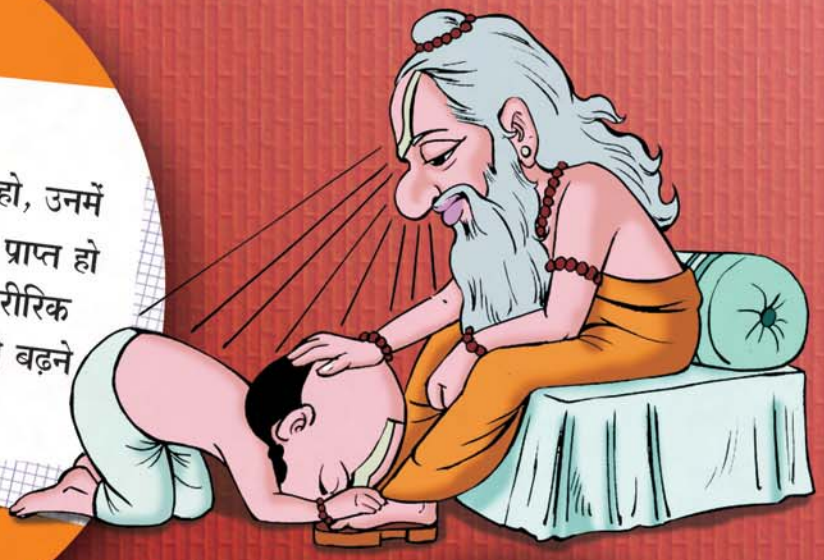

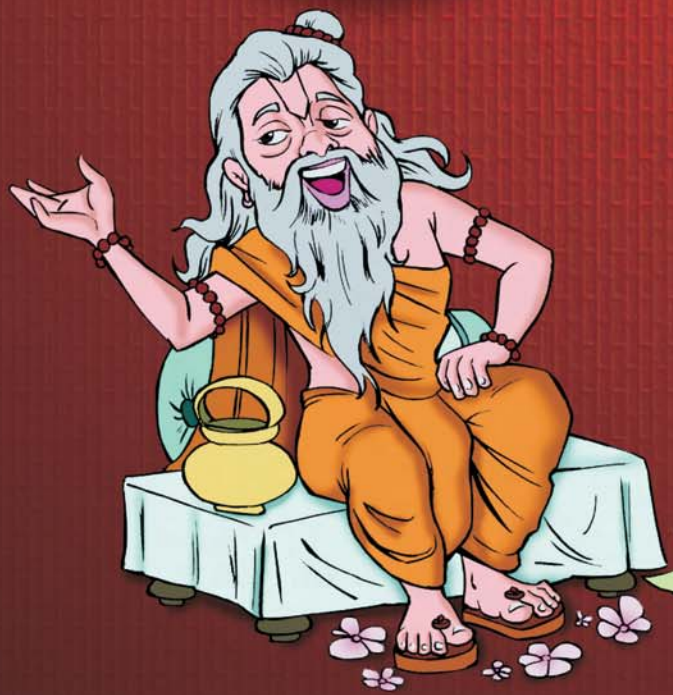

गुरु और शिष्य के बीच तो प्रेम की कड़ी इतनी अच्छी होती है कि गुरु जो बोलें वह उसे बहुत अच्छा लगे, ऐसी तो प्रेम की कड़ी होती है।

ही बात है!

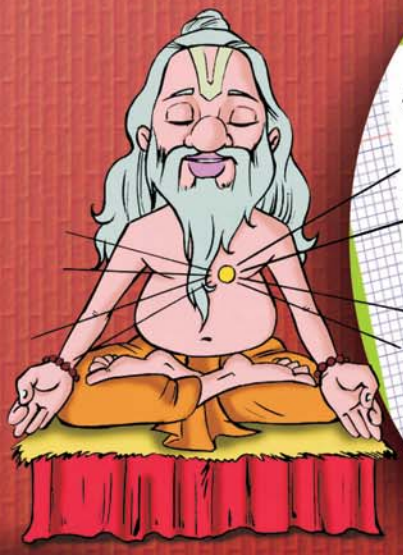

अगर फिर शिष्य तंग आकर बोले कि "ये तो बिना बरकत के गुरु मिले हैं!" ऐसा एक ही बार बोले तो सब किया-कराया खत्म हो जाएगा! यानी कि यदि कभी गुरु के अधीन नहीं रहा तो क्षणभर में ही सब खत्म कर देगा!

यदि गुरु की आज्ञा का पालन करें तो उन्हें गुरु दक्षिणा पहुँच जाती है।

१० जनवरी २०१३

चलो खेलें...

१. नीचे दिए गए वाक्यों को सही क्रम में लिखो।

१. पड़ती है न!" गलती तो परीक्षक को दुनियावालों को ही मालूम तारीफ करने में क्या परेशानी है? लेकिन

२. अपनी प्रगति या मान की विनय गुरु को यह तो के लिए ही हैं ज़रूरत नहीं होती,

३. प्राप्त हो जाती है। समर्पित होते हो, मतलब शारीरिक नहीं, लेकिन ज्ञानमार्ग में आगे तुम जिन्हें बढ़ने की शक्ति! उन में जो ताकत होती है वह तुम्हें ताकत

४. भीतर से शिष्य को तो हो गया कल्याणा! गुरु कैसा उनके अधीन ही यदि गुरु की आज्ञा में रहा, रहना चाहिए। भी वर्तन करें लेकिन

२. इस आकृति में तुम्हें कितने चेहरें दिखाई दे रहे हैं, गिनो।

३. वाक्य को जोड़ियाँ बनाओ

१. गुरु के भीतर भगवान	A. प्राप्त हो ही नहीं सकता।
२. गुरु पर अभाव नहीं आए	B. कृपा कम हो जाती है।
३. कोई भी ज्ञान गुरु बिना	C. जिते-जागते भगवान बैठे हैं।
४. गुरु का अविनय करने से	D. तो अपनी श्रद्धा फलती है।

४. नीचे बताई गई आकृति में दियासलाईयाँ से १० समान त्रिकोणा बनाए गए है, उसमें से कम से कम दियासलाईयाँ को निकालकर ४ त्रिकोणा बनाओ।

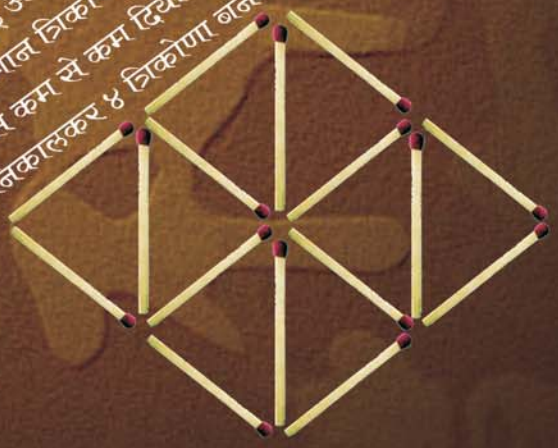

५. नीचे दिए गए पज़ल सोल्व करने के लिए खड़ी और आड़ी चावी का इस्तेमाल करो।

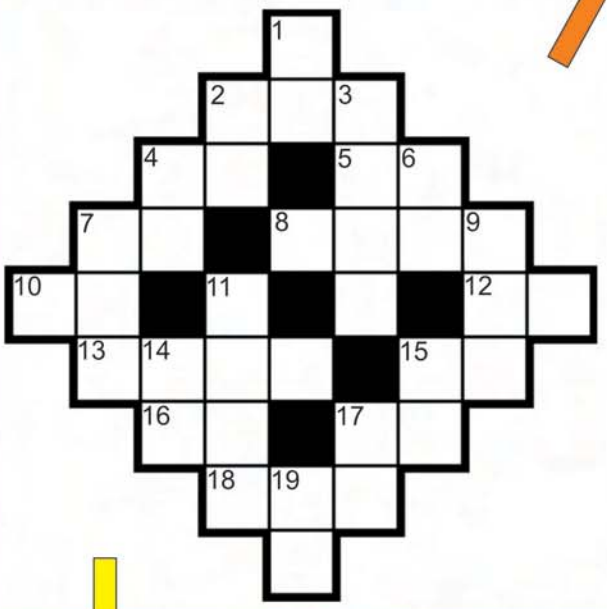

आड़ी चावी

२. ७ खड़ी चावी, कम करके ४८२
४. एक साल में आते हफ्तों की गिनती
५. ४ हफ्ते में आनेवाले दिनों की गिनती
७. ७ x ९
८. ८६१७ को सेट करो
१०. १५ खड़ी चावी + ४२
१२. १०० का १/४ हिस्सा
१३. १०,४८६ का आधा।
१५. १० आड़ी चावी का आधा
१६. ४ आड़ी चावी का १/४
१७. ४ x २२
१८. ८२ + ६२ + ७८

खड़ी चावी

१. ४ x ८
२. १२ आड़ी चावी - १६ आड़ी चावी
३. १६४० x २
४. ६ खड़ी - ५ आड़ी
६. ९ x ९
७. ५ x १२१
९. १४५० का आधा
११. ७१६ x २
१४. ६३ का १/३
१५. २ दिन में आनेवाले घंटों की गिनती
१७. ४१ x २
१९. १०० / ५

६. इस आकृति में जो सेब हैं, उन्हें ३ लाइन की मदद से सात विभाग में इस तरह सेट करो कि हर एक विभाग में एक सेब आए।

ऐतिहासिक गौरव गाथाएँ

चंपानगरी में राजा दधिवाहन राज्य करते थे। महारानी का नाम धारिणी था। राजा धर्मप्रेमी और प्रजावत्सल थे। उनकी एक पुत्री थी। उसका नाम वसुमती था। जिसे हम सती चंदनबाला के नाम से पहचानते हैं। धर्म के संस्कार तो जैसे वह पूर्वजन्म से ही लेकर आई थी। छोटी उम्र में जब सहेलियों के बीच झगड़ा होता था तो वसुमती सभी को वीतराग भगवान का बोध देकर शांत करती। ऐसे सालों बीत गए। वसुमती युवा हो गई। अत्यंत रूपवान वसुमती युवावस्था में भी धर्म की उपासना में श्रेष्ठ थीं।

एक दिन कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक ने चंपानगरी पर चढ़ाई की। अचानक आक्रमण से भयभीत होकर राजा दधिवाहन भाग गऐ। माता धारिणी और पुत्री वसुमती दोनों को रथ में बिठाकर एक सैनिक ले गया। सैनिक की माता धारिणी के प्रति दृष्टि बिगड़ी। सुनसान जंगल में उसने रथ खड़ा किया। अचानक रथ खड़ा करने का कारण पूछने पर वह ज़ोर-ज़ोर से हँसा और माता धारिणी को अपनी रानी बनने के लिए कहा।

सैनिक की नीयत बिगड़ी है, ऐसा समझकर उन्होंने अपनी अंगूठी में से हीरा निकालकर चूस लिया और मृत्यु को अपनाया। माता की मृत्यु पर वसुमती कल्पांत करने लगी और सैनिक तो स्तब्ध ही हो गया। वसुमती सैनिक से उसे छोड़ देने

के लिए गिड़गिड़ाने लगी। सैनिक ने सोचा, यदि वसुमती भी माता की तरह मृत्यु को स्वीकार लेगी तो मेरे हाथ में कुछ भी नहीं आएगा। यह सोचकर वह वसुमती को लेकर कौशाम्बी नगरी में आया। उसने वसुमती को भरे बाज़ार में बेचने के लिए चौराहे पर खड़ा किया।

अहो! क्या कर्म की लीला है! राजकुमारी के रूप में जन्मी और लाड़ प्यार से पली वसुमती, आज असहाय और निराधार स्थिति में भरे बाज़ार में खड़ी थी। ऐसी स्थिति में भी वसुमती भगवान के बोध को भूली नहीं थी। बाहर दुःखद परिस्थिति होते हुए भी अंदर वह समता में थी। मेरा पाप कर्म अभी मुझे यह फल दे रहा है, उसमें किसीका दोष नहीं है। सैनिक तो इसमें निमित्त मात्र ही है। ऐसी शुभ भावना करते हुए वह खड़ी रही।

उसके रूप से आकर्षित होकर बहुत से लोग उसे खरीदने के लिए आए, लेकिन कीमत बहुत अधिक होने के कारण कोई उसे खरीद नहीं पाया।

इतने में वहाँ से सेठ धनावह गुज़रे। तो संस्कारी सेठ की नज़र चौराहे पर बिकने के लिए खड़ी की हुई, उस कुमारी कन्या पर पड़ी। वसुमती को देखते ही, यह तो किसी ऊँचे कुल की कन्या है और पाप कर्म के कारण अभी इस हाल में हैं ऐसा समझ गए, यह दुराचारी व्यक्तियों के हाथ में न चली जाए और बच जाए, इस आशय से सैनिक को मनमानी कीमत देकर उसे खरीद लिया।

-आगे अगले अंक में...

“ऐसी स्थिति में भी वसुमती भगवान के बोध को भूली नहीं थी।”

अपने आपको परीक्षण करके देखो...

नीचे दिए हुए प्रसंग में से ढूँढो कि किसे गुरु कृपा मिली और कौन गुरु कृपा से वंचित रहा।

"अगले सोमवार को भूगोल के टेस्ट के लिए तैयार हो जाना। यह टेस्ट बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए खास ध्यान रखकर पढ़ना।" कोठारी सर ने क्लास में बताया।

"ओ नो! "फिर से दूसरा टेस्ट। अभी दस दिन पहले तो भूगोल का टेस्ट था। कोठारी सर इतने निर्दयी क्यों हैं?" कोठारी सर की क्लास पूरी होते ही शशांक मुँह बिगाड़कर बोला।

प्रणय ने कहा, "कोठारी सर का दिमाग ठिकाने पर नहीं है। वे तो बोलते रहते हैं। हम तो शाम को प्लान के अनुसार क्रिकेट मैच देखेंगे। दीप, आएगा न शाम को मेरे घर मैच देखने?"

दीप, "नहीं यार। सर ने कहा है न कि टेस्ट बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए मैं तो आज शाम को टेस्ट के लिए पढूँगा।"

शाम को शशांक को मैच देखने का मन हुआ लेकिन फिर सोचा, "सर ने कहा है कि टेस्ट बहुत महत्वपूर्ण है, तो मुझे पढ़ना चाहिए। सर का कहना मानना चाहिए।" इसलिए मैच देखना कैन्सल करके शशांक पढ़ने बैठ गया।

दूसरे दिन जब कोठारी सर क्लास में आए, तब क्लास में बहुत शोर हो रहा था। एकदम गुस्से में सर बोले, "शशांक, तुझे क्लास का मॉनीटर क्यों बनाया है? खाली बैठने के लिए? इतना ज्यादा शोर क्यों है क्लास में?"

"आई एम वेरी सॉरी सर। मैं टेस्ट की तैयारी में तल्लीन हो गया था। फिर से ऐसी गलती नहीं होगी।" शशांक ने विनयपूर्वक जवाब दिया।

क्लास शुरू हुई तो सर ने सभी को ग्रेडेड होम-वर्क वापस दिया। वापस देते समय सर ने सुहास के ड्रॉइंग की बहुत तारीफ की। यह सुनकर प्रणव के मन में हुआ, "कितने पक्षपाती हैं! हमेशा सुहास की ही तारीफ करते रहते हैं।"

कुछ दिन के बाद, भूगोल के टेस्ट का परिणाम बताते हुए सर ने कहा, "आठवीं क्लास के विद्यार्थी शैक्षणिक टूर के लिए जा रहे हैं। तो मैंने प्रिन्सिपल सर से आप सभी को भी इस टूर में ले जाने के लिए विनती की, तब सर ने मुझे फिर से आप सभी का टेस्ट लेने को कहा है और कहा है कि जो इस टेस्ट में अच्छे मार्क्स स्कोर करेगा उन्हें ले जाया जाएगा। इसलिए बच्चों, आप सभी का फिर से टेस्ट होगा!"

अब मित्रो, तुम बताओ कि, इस टूर के लिए किसका चयन हुआ?

नीचे दिए हुए टेबल के अनुसार, शशांक, दीप और प्रणव को गुरुकृपा मिली या वंचित रहे उसका उनके हर एक विचार, वाणी और वर्तन से मूल्यांकन करो और उनके गुरुकृपा पॉइन्टस की गिनती करो। जिनको १०० या अधिक गुरुकृपा पॉइन्टस मिले हैं, उन्हें टूर के लिए चुना जाएगा। तुम्हारे अनुसार टूर में जाने के लिए किसे चुनना चाहिए?

हर एक स्कोर के बारे में कुछ शब्द लिखिए।

गुरुकृपा पानेवाले (+१०० पॉइन्टस)	गुरुकृपा से वंचित रहनेवाले (-१०० पॉइन्टस)
१. गुरु के कहे अनुसार किया	गुरु के कहे से उल्टा किया.
२. गुरु के प्रति विनय रखना	गुरु के प्रति अविनय और अभाव रखना
३. गुरु के प्रति कभी भी भाव नहीं बिगाड़ना	गुरु के दोष देखना

१. शशांकः

२. प्रणयः

३. दीपः

जवाब

टूर के लिए शशांक और दीप को चुना जाएगा।

शशांक : - १०० (सर को निर्दयी कहने के लिए) +१०० (मैच देखने की इच्छा होते हुए भी, सर के कहे अनुसार पढ़ने के लिए) +१०० (सर के कठोर शब्दों का विनयपूर्वक जवाब देने के लिए) = १००

दीप : १०० (सर के कहे अनुसार पढ़ने का निर्णय किया)

प्रणय : - १०० (सर का दोष देखा और उनके कहने से उल्टा करने का सोचा) + (- १००) (सर पक्षपाती हैं, ऐसा दोष देखने के लिए) = -२००

मीठी यादें

एक बहन थीं। उन्हें नीरू माँ के प्रति बहुत भक्ति थी। जब भी वे नीरू माँ से मिलतीं या सत्संग में जातीं तब नीरू माँ को अपने हाथ से गूँथी हुई फूल की माला ज़रूर पहनातीं। उनका भक्ति भाव देखकर नीरू माँ भी वह माला पहनकर रखतीं, निकालती नहीं थीं, यह देखकर उन बहन को बहुत आनंद होता।

कुछ समय बाद उन बहन के संयोग नीरू माँ के साथ रहने के बने। वहाँ भी उन्होंने रोज़ माला गूँथकर नीरू माँ को पहनाना जारी रखा। धीरे-धीरे ऐसा होने लगा कि बहन को माला गूँथने का समय न मिले, तो वे सत्संग में बैठे-बैठे माला गूँथती और सत्संग पूरा होने के बाद नीरू माँ को पहनातीं। इस तरह सत्संग सुनते-सुनते माला गूँथती। कई बार सत्संग पूरा हो जाता फिर भी उनका माला गूँथना जारी ही रहता और कितनी बार अन्य कोई काम हो तो भी वे उसे छोड़कर माला गूँथने बैठ जातीं।

एक बार, हर बार कि तरह उन्हों ने नीरू माँ को माला पहनाई। नीरू माँ बोले, "अब यह माला बनाना बंद कर और आप्तवाणी पढ़ना शुरू कर।" उस दिन से उनका ध्यान माला बनाने के बदले पढ़ने और काम में केंद्रित हो गया।

देखा मित्रों, नीरू माँ भक्ति को प्रोत्साहन देते थे। लेकिन वही भक्ति जब व्यसन बन गई, मतलब काम और सत्संग को छोड़कर सिर्फ माला बनाने में पड़ गईं, तब नीरू माँ ने उसे एक झटके में काट दिया और नॉर्मेलिटी में ला दिया।

पुस्तकों और दादावाणी का काम ज़ोर-शोर से चालू था। अपनी संस्था में सब नया डिवेलप हो रहा था। एक बार एक पुस्तक का कवर पेज तैयार करके एक भाई नीरू माँ को दिखाने के लिए आए थे। उन्हों ने पहली बार कवर पेज बनाया था, इसिलए वे बहुत खुश थे। नीरू माँ को दिखाया। नीरू माँ को कवर पेज थोड़ा कम पसंद आया। उन्होंने कहा, "जिस टॉपिक पर इस पुस्तक में बातें हैं, उसका आशय कवर पेज पर नहीं दिखता।"

उस भाई ने कहा, "नहीं नीरू माँ, इसे इस तरह देखना है, इस तरह समझना हैं।"

तुरंत ही नीरू माँ ने कवर पेज ओके कर दिया कि ठीक है और उसी कवर पेज के साथ पुस्तक तैयार हुई।

देखा मित्रो, नीरू माँ किसी भी व्यक्ति का भाव नहीं तोड़ते थे। उन्होंने व्यवहार की कीमत ही नहीं रखी थीं। इससे जब कोई थोड़ी भी पकड़ पकड़े तो वे तुरंत ही वह छोड़ सकती थीं। सामनेवाले के आनंद के लिए भी खुद छोड़ देते थे।

पज़ल के जवाब

१.

१. दुनियावालों को तारीफ करने में क्या परेशानी है? लेकिन गलती तो परीक्षक को ही मालूम पड़ती है न!

२. गुरु को विनय या मान की ज़रूरत नहीं होती, यह तो अपनी प्रगति के लिए ही हैं।

३. तुम जिन्हें समर्पित होते हो, उनमें जो ताकत होती है वह तुम्हें प्राप्त हो जाती है। ताकत मतलब शारीरिक नहीं, लेकिन ज्ञानमार्ग में आगे बढ़ने की शक्ति!

४. गुरु कैसा भी वर्तन करें लेकिन भीतर से शिष्य को उनके अधीन ही रहना चाहिए। यदि गुरु की आज्ञा में रहा, तो हो गया कल्याण!

२. १०

३.
१ - C
२ - D
३ - A
४ - B

४.

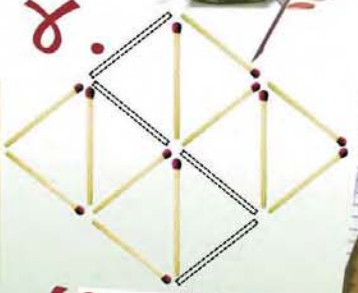

५.

६.

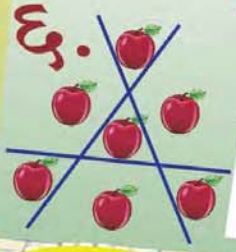

परम पूज्य दादाश्री के १०५वे जन्म जयंति महोत्सव की झलक

परम पूज्य दादाश्री का पूजन करते हुए पूज्यश्री

विविध सांस्कृतिक नृत्यों द्वारा जन्म जयंति महोत्सव का शुभारंभ

Akram Express

January 2013
Year : 1, Issue : 9
Conti. Issue No.:9

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 08th of every month

चिल्ड्रन पार्क - बालविज्ञान डोम की झलक

Printer, Publisher and Owner - Mr. Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Mr. Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, 5, Mamtapark Society, Bh. Navgujarat College,Usmanpura, Ahmedabad-14.